● सुनो, समझो और पढ़ो :

६. कुछ स्मृतियाँ

– डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

जन्म : १५ अक्तूबर १९३१, रामेश्वरम (तमिळनाडु) **मृत्यु :** २७ जुलाई २०१५, **रचनाएँ :** अग्नि की उड़ान, छुआ आसमान ।
परिचय : डॉ. कलाम ने भारत के राष्ट्रपति पद को विभूषित किया था । आपको 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया है ।
इस आत्मकथा अंश में लेखक ने अपने बचपन की कुछ स्मृतियों को शब्दांकित किया है ।

खोजबीन

अंतरजाल से पद्‌मभूषण से विभूषित विभूतियों की जानकारी का संकलन करके सुनाओ ।

रामनाथपुरम में रहते हुए अयादुरै सोलोमन से मेरे संबंध एक गुरु-शिष्य के नाते से अलग हटकर काफी प्रगाढ़ हो गए थे । उनके साथ रहते हुए मैंने यह जाना कि व्यक्ति खुद अपने जीवन की घटनाओं पर काफी असर डाल सकता है । अयादुरै सोलोमन कहा करते थे-'जीवन में सफल होने और नतीजों को हासिल करने के लिए तुम्हें तीन प्रमुख शक्तिशाली ताकतों को समझना चाहिए-इच्छा, आस्था और विश्वास ।' श्री सोलोमन मेरे लिए बहुत ही श्रद्‌धेय बन गए थे । उन्होंने ही मुझे सिखाया कि मैं जो कुछ भी चाहता हूँ, पहले उसके लिए मुझे तीव्र कामना करनी होगी फिर निश्चित रूप से मैं उसे पा सकूँगा । मैं खुद अपनी जिंदगी का ही उदाहरण लेता हूँ । बचपन से ही मैं आकाश एवं पक्षियों के उड़ने के रहस्यों के प्रति काफी आकर्षित था । सारस को समुद्र के ऊपर अक्सर मँड़राते देखता था । अन्य

दूसरे पक्षियों को ऊँची उड़ानें भरते देखा करता था । हालाँकि मैं एक बहुत ही साधारण स्थान का लड़का था लेकिन मैंने निश्चय किया कि एक दिन मैं भी आकाश में ऐसी उड़ानें भरूँगा । वास्तव में कालांतर में उड़ान भरने वाला मैं रामेश्वरम का पहला बालक निकला ।

अयादुरै सोलोमन सचमुच एक महान शिक्षक थे क्योंकि वे सभी विद्‌यार्थियों को उनके भीतर छिपी शक्ति एवं योग्यता का आभास कराते थे । सोलोमन ने मेरे स्वाभिमान को जगाकर एक ऊँचाई दी थी, और मुझे एक ऐसे माता-पिता के बेटे जिन्हें शिक्षा का अवसर नहीं मिल पाया था, यह आश्वस्त कराया कि मैं भी अपनी आकांक्षाओं को पूरा कर सकता हूँ । वे कहा करते थे-'निष्ठा एवं विश्वास से तुम अपनी नियति बदल सकते हो ।'

बात उस समय की है जब मैं चौथी 'फार्म' में था । सारी कक्षाएँ स्कूल के अहाते में अलग-अलग झुंडों के रूप में लगा करती थीं । मेरे गणित के शिक्षक रामकृष्ण अय्यर एक दूसरी कक्षा को पढ़ा रहे थे । अनजाने में ही मैं उस कक्षा से होकर निकल गया । तुरंत ही एक प्राचीन परंपरावाले तानाशाह गुरु की तरह रामकृष्ण अय्यर ने मुझे गरदन से पकड़ा और भरी कक्षा के सामने बेंत लगाए । कई महीनों बाद जब गणित में मेरे पूरे नंबर आए तब रामकृष्ण अय्यर ने स्कूल की सुबह की प्रार्थना में सबके सामने यह घटना सुनाई-'मैं जिसकी बेंत से

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ किसी परिच्छेद का वाचन करें । विद्‌यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ । प्रतिदिन अपने दिनभर के अनुभवों को लिखने के लिए प्रेरित करें । आगे चलकर क्या बनना चाहते हैं और क्यों, यह बताने के लिए कहें ।

स्वयं अध्ययन

भारत के प्रक्षेपणास्त्रों की जानकारी पढ़ो और तालिका बनाओ ।

www.isro.gov.in

- नाम
- कब छोड़ा गया ? वर्ष
- कहाँ से ?

पिटाई करता हूँ वह एक महान व्यक्ति बनता है । मेरे शब्द याद रखिए, यह छात्र विद्‌यालय और अपने शिक्षकों का गौरव बनने जा रहा है ।' उनके द्‌वारा की गई यह प्रशंसा क्या एक भविष्यवाणी थी ?

श्वाट्‌र्ज हाइस्कूल से शिक्षा पूरी करने के बाद मैं सफलता हासिल करने के प्रति आत्मविश्वास से सराबोर छात्र था । मैंने एक क्षण भी सोचे बिना और आगे पढ़ाई करने का फैसला कर लिया । उन दिनों हमें व्यावसायिक शिक्षा की संभावनाओं के बारे में कोई जानकारी तो थी नहीं । उच्च शिक्षा का सीधा-सा अर्थ कॉलेज जाना समझा जाता था । सबसे नजदीक कॉलेज तिरुचिरापल्ली में था । उन दिनों इसे 'तिरिचनोपोली' कहा जाता था और संक्षेप में 'त्रिची' ।

जब कभी भी मैं त्रिची से रामेश्वरम लौटता तो मेरे बड़े भाई मुस्तफा कलाम, जो रेलवे स्टेशन रोड पर परचून की एक दुकान चलाते थे, मुझसे थोड़ी-बहुत मदद करवा लेते थे और कुछ-कुछ घंटों के लिए दुकान को मेरे जिम्मे छोड़ जाते थे । मैं तेल, प्याज, चावल और दूसरा हर सामान बेच लेता था । मैंने पाया कि सिगरेट और बीड़ी सबसे ज्यादा बिकने वाली वस्तुएँ थीं । मुझे ताज्जुब हुआ करता कि गरीब लोग अपनी कड़ी मेहनत की कमाई को किस तरह धुएँ में उड़ा देते हैं । जब मैं मुस्तफा के यहाँ से खाली हो जाता तो अपने छोटे भाई कासिम मुहम्मद की दुकान पर चला जाता । वहाँ मैं शंखों एवं सीपियों से बने अनूठे सामान बेचा करता था । भाइयों की सहायता करना मुझे अच्छा लगता था ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

स्मृतियाँ = यादें
प्रगाढ़ = बहुत अधिक
आस्था = श्रद्‌धा
कामना = इच्छा
आभास = संकेत
आश्वस्त = निश्चिंत
सराबोर = भरा हुआ
परचून की दुकान = किराने की दुकान
ताज्जुब = आश्चर्य
कड़ी = कठिन

विचार मंथन

।। मान दे सम्मान दे, शिक्षा सकल जहान दे ।।

बताओ तो सही

भारत के अबतक के राष्ट्रपतियों के नाम और उनका कार्यकाल बताओ ।

मेरी कलम से

स्त्री शिक्षा से इनपर क्या प्रभाव पड़ता है, लिखो : स्वयं, परिवार, समाज, देश ।

*** वाक्य का सही क्रम लगाकर वाक्य फिर से लिखो :**

(क) रेलवे स्टेशन रोड पर परचून की एक दुकान चलाते थे (ग) सोलोमन जी ने मेरे स्वाभिमान को जगाकर एक ऊँचाई दी थी ।
(ख) सबसे नजदीक कॉलेज तिरुचिरापल्ली में था । (घ) सारस को समुद्र के ऊपर अक्सर मँड़राते देखता था ।

भाषा की ओर

चित्र के आधार पर सभी कारकों का प्रयोग करके वाक्य लिखो :

१. मछुआरे ने जाल फेंका ।
२. ------------------------------
३. ------------------------------
४. ------------------------------
५. ------------------------------
६. ------------------------------
७. ------------------------------
८. ------------------------------